International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
www.hindijournal.com
Volume 1; Issue 1; November 2015; Page No. 39-40

नवेन्दु महर्षि द्वारा रचित 'भारत दलित क्रान्ति' शीर्षक ग्रंथ में दलित चेतना

पूजा रानी

एम.फिल. (छात्रा), दक्षिण भारत हिंन्दी प्रचार सभा, चेन्नइ, तमिलनाडु, भारत।

प्रस्तावना

दलित शब्द हजारों वर्षो से अछूत समझी जाने वाली समाज की उन सभी जातियों के लिए प्रयोग में लाया जाता है, जिसे इस ब्राह्मणवादी समाज में निचले पायदान के लिए प्रयोग किया जाता है एवं संविधान में जिसे अनुसूचित जाति कहा जाता है।

दलित शब्द का अर्थ

पीड़ित, दबा हुआ, खिन्न, दास, टुकड़ा, खंडित, तोड़ना, कुचलना, दला हुआ, पीसा हुआ, मसला हुआ, रौंदा हुआ, विनष्ट।

दलित शब्द की परिभाषाएं

1. **"डा0 राजेन्द्र यादव के अनुसार :** ''दलित की श्रेणी में स्त्री, पिछड़ी जाति एवं दलित वर्ग के लोग आते हैं।''
2. **प्रसिद्ध मराठी एवं दलित लेखक नारायण सर्वे के अनुसार :** ''केवल बौद्ध या पिछड़ी जातियाँ ही नहीं समाज में जो भी पीड़ित है, दलित है।''[1]

अर्थात् जिसका दलन और दमन हुआ है, जिसे दबाया गया है, मरोड़ा, मसला, रौंदा, कुचला, खंडित, शोषित या सताया गया हो, उसे ही दलित कहा गया है।

चेतना

मन की वह वृत्ति या शक्ति जिससे जीव या प्राणी को आन्तरिक (अनुभूतियों, भावों, विचारों) और बाहरी (घटनाओं, तत्वों या बातों) का अनुभव प्राप्त होता है। सृष्टि में जड़ पदार्थ तो निर्जीव होते हैं तथा चेतन पदार्थ सजीव होते हैं। चेतना मनुष्य को अपने ऊपर नियंत्रण करना सिखाती है।

चेतना के कारण ही मनुष्य और पशु में अन्तर पाया जाता है। चेतना ही मनुष्य को चिन्तनशील व विवकेशील बनाती है चेतना मनुष्य के मस्तिष्क में पैदा होने वाला विशेष भाव है। जो चेतना सम्पन्न मनुष्य को अच्छे–बुरे और उचित–अनुचित का ज्ञान करवाता है।

चेतना की परिभाषाएं

1. **वृहद हिन्दी शब्दकोष के अनुसार :** ''बुद्धि, होश में आना, विवेक से काम लेना और सावधान होने को चेतना कहा जाता है।''[2]
2. **हिन्दी शब्द सागर के अनुसार :** ''बुद्धि मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, स्मृति और होश में आना।"[3]

नवेन्दु महर्षि का साहित्य दलित जीवन को प्रतिबिम्बित करता हुआ यथार्थवादी घटनाओं पर आधारित है। इन्होंने दबे–कुचले–वंचित समाज के समक्ष अपने साहित्य के माध्यम से एक नई राह का मार्ग खोल दिया है तथा दलित समाज में चेतना को विकसित करने के लिए अपने साहित्य द्वारा ओर भी गतिशीलता प्रदान की है।

नवेन्दु जी कहते हैं कि

''आज हिंदुस्तान दो भागों में बंट चुका है। एकतरफ सुख–वैभव से परिपूर्ण सवर्ण हिन्दुस्तान है, तो दूसरी तरफ दुख–दैन्य और अभाव ग्रस्त दलित–पिछड़ा, आदिवासी हिन्दुस्तान है। यह अंतराल दिन भर दिन बढ़ता ही जा रहा है। इस स्थिति को उलटने की जरूरत है, इस स्थिति को पलटने की जरूरत है और इस स्थिति से निपटने की जरूरत है।''[4]

नवेन्दु जी का विचार है कि इस स्थिति से निपटने के लिए समग्र दलित क्रान्ति की आवश्यकता है जोकि सामाजिक बदलाव तथा परिवर्तन के द्वारा ही संभव है।

समाज में बदलाव लाने के लिए नवेन्दु जी ने चार बिंदुओं को आधार बनाया है

- ''समस्त दलित– पिछड़े और आदिवासी समाज को इस तथाकथित हिंदू धर्म के देवी–देवताओं को मानना छोड़ देना चाहिए और इसके अंधविश्वासों से खुद को मुक्त कर लेना चाहिए।''
- सभी दलित–पिछड़े तथा आदिवासी लोगों को आपसी मतभेद कर एक मंच पर आ जाना चाहिए।
- संविधान द्वारा दिए गए अपने हक ओर अधिकारों के लिए लामबद्ध होकर संघर्ष करना चाहिए।
- सभी एकजुट शोषित समाज को अपने सामने समाज परिवर्तन तार्किक समाज क्रान्ति के बाद का एक दृष्टिकोण भी रखना चाहिए।''[5]

सोच–विचार तथा संघर्ष के बिना ना तो कभी भी कोई समुदाय जागरूक हो सकता है और ना ही सफलता प्राप्त कर सकता है।

नवेन्दु जी कहते हैं किः–

''बिना विचार का संघर्ष सवार–विहीन घोड़े के समान होता है, जो किसी भी मंजिल तक नहीं पहुंचता है।''[6]

नवेन्दु जी के साहित्य ने दलित समाज में विचार पैदा करने का काम किया है। जिस साहित्य ने सदियों से निद्रा में मग्न दलित जनता में जागृति उत्पन्न कर चेतना पैदा की है। स्वाभिमान पैदा हुआ है तथा अपने समाज के लिए कुछ करने की हिम्मत, हौंसला व जज्बा पैदा हुआ है।

- **"भारत दलित क्रान्ति"**कृति में लेखक ने दलितों को अपने पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने की बात की है। अभी भी समय है– तुम जाग जाओ। वरना एक दिन दलित समाज का आस्तित्व ही मिट जाएगा। इसी कृति में लेखक ने दलित समाज को ब्राह्मणवादी समाज की कुटिल नीतियों, संकीर्णताओं, मानसिकताओं, भेदभाव की रूढ़ियों का बहिष्कार करने का आह्वान किया है।
- **'पुलिस व्यवस्था पर थूको'** शीर्षक में लेखक दलितों का आह्वान करते हुए कहता है –

  ''ऐ दलितों ! ये पुलिस ऊँचे समाज के लिए है। पुलिस दलितों पर जुल्म ज्यादतियां करती है। पुलिस समाज को भयरहित बनाने के लिए होती है लेकिन ये पुलिस जनता में खौंफ पैदा करती है। इसलिए मैं कहता हूं कि पुलिस की इस छवि पर थूको।"[7]
- **'न्याय व्यवस्था पर थूको'** शीर्षक में लेखक लिखता है कि –

"न्याय प्रणाली में धन का बोलबाला है। धन का भ्रष्टाचार है। धनवान पैसे देकर न्याय खरीद लेते है। न्याय गरीबों के खिलाफ है। दलित समाज के खिलाफ षड़यंत्र है। दलित समाज अन्याय का शिकार है। इसलिए मैं कहता हूं कि न्यायवाद पर थूको।"[8]

- **'रिश्वतखोरी पर थूको'** शीर्षक में लेखक कहता है कि –
  "धनवान लोगों ने रिश्वत को पैदा किया है। गरीब इस व्यवस्था का शिकार है। दलितों की कहीं सुनवाई नहीं है। ये व्यवस्था दलितों के खिलाफ है। व्यवस्था पैसे वालों की मुट्ठी में है। इसलिए मैं कहता हूँ कि इस रिश्वतखोरी पर थूको।''[9]
- **'मनुवादी व्यवस्था पर थूको'** शीर्षक में लेखक कहता है कि –
  'ऐ दलितों ! देश की समाज व्यवस्था आज भी मनुवादी सोच पर आधारित है इसके पीछे सत्ता का षड़यंत्र है। ऊँचे समाज को ऊँचा उठाओ। नीचे समाज को और नीचा करो। यही है मनुवाद। इसलिए मैं कहता हूं कि मनुवाद पर थूको।"[10]

'ब्राह्मणवाद पर थूको' शीर्षक में लेखक कहता है कि:–
''ऐ दलितों ! ये ब्राह्मणवाद तुम्हारी उन्नति का पक्षधर नहीं हैं। ये ब्राह्मणवाद तुम्हें नीच समझता है। सम्मान और बराबरी नहीं देना चाहता। तुम्हें हर क्षेत्र में पीछे रखना चाहता हैं ये ब्राह्मणवाद तुम्हारा दुश्मन है। इसलिए मैं कहता हूँ कि इस ब्राह्मणवाद पर थूको।"[11]

- **'धर्मवाद पर थूको'** शीर्षक में लेखक बताना चाहता है कि –
  ''ऐ दलितों ! ये धर्म ही है, जो तुम्हें उलझाये हुए है। जो तुम्हें तरक्की नहीं करने देते। तुम धर्म के फेर में पड़े हो। इसलिए तुम समाज में पीछे हो। दुखी, परेशान और मुसीबतों में हो। ये धर्म तरक्की की राह में रोड़ा है। इसलिए इस धर्मवाद पर थूको।''[12]
- **'अंधविश्वासों पर थूको'** नामक शीर्षक में लेखक लिखता है कि–
  ''ऐ दलितों ! तुम आज भी अंधविश्वास में डूबे हो। ये अंधविश्वास तुम्हे कुछ नहीं देंगें। सिवाय अशिक्षा के, अज्ञान के, अभाव के और बदहाली के और पिछड़ेपन के। इसलिए इन अंधविवासों पर थूको।''[13]
- **'भाग्यवाद पर थूको'** नामक शीर्षक में लेखक कहता है कि–
  ''ऐ दलितों ! तुम्हारी उन्नति के मार्ग में जितनी बाधाएँ हैं और तुम्हारे उत्थान में जितने भी रोड़े हैं। उनमें सबसे बडा रोड़ा ये भाग्यवाद भी है। अपनी सोच को भाग्य बनाओ। अपनी सोच से भाग्य को बदलों। सोच से ही सफलताएं प्राप्त की जा सकती है। सोच के अनुसार कर्म करोगे तो मनवांछित सफलताएँ मिलेगी। इसलिए इस भाग्यवाद पर थूको।"[14]
- **'अधूरी आजादी पर थूको'** नामक शीर्षक में महर्षि जी लिखते है कि –
  ''ऐ दलितों ! देश को जो आजादी मिली है, यह अधूरी है। क्योंकि यह उच्च जाति के लोगों को ही मिली है। दलितों की उन्नति तो अभी हुई ही नहीं है। इसे पूरी आजादी तभी कहा जाएगा, जब इसका लाभ शत–प्रतिशत जनता को मिलेगा और जब शत–प्रतिशत समाज की उन्नति होगी। इसलिए मैं कहता हूँ कि ऐसी अधूरी आजादी पर थूको।''[15]
- **'हीनता बोध पर थूको'** शीर्षक में नवेन्दु जी लिखते है कि–
  ''ऐ दलितों ! दलित समाज के भीतर सदियों से चली आती हीनता की भावना अभी तक कायम है। जाति को छुपाने की उसकी मनोग्रन्थि उसमें बनी रहती है। दलित समाज के भीतर आजादी के बाद अभी भी स्वाभिमान, उसमें गौरव गर्व की भावना अभी तक विकसित नहीं हुई है। वो मान–अपमान के चक्कर में छुप–छुप कर और डर–डरकर जी रहा हैं। तो ऐसे हीनता बोध पर थूको।''[16]

इस प्रकार नवेन्दु महर्षि जी ने भारत दलित क्रांति' शीर्षक कृति के द्वारा दलित समाज में क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित कर दी है। ताकि दलित जनता को उनके अधिकारो, कर्त्तव्यों, जरूरतों, जिम्मेदारियों आदि के प्रति जागरूक किया जा सके। दलित जनता को अपने अधिकारों के हनन को रोकने के लिए तथा उनकी रक्षा के लिए नींद से जागना होगा तथा अपने हिस्से की आजादी की खातिर सबको सड़क पर उतरना होगा। समाज में फैली पुरातन रूढ़ियों, रिश्वतखोरी, धर्मवाद, मूर्तिपूजा, भ्रष्टाचार, पूंजीवादी मनुवाद, ब्राह्मणवाद, अंधविश्वास, रीति–रिवाज, परम्पराओं, भाग्यवाद, पुरूङ्डवाद, चमत्कारों, तंत्र–मंत्र, अधूरी आजादी आदि को त्यागना होगा। तभी दलित समाज उन्नति कर सकता है एवं विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

- **नवेंन्दु महर्षि जी लिखते है कि –**
  ''दलित समाज धीरे–धीरे एकजुट होना शुरू हो चुका है। दलित समाज इन दिनों विचार क्रान्ति के संक्रमण काल से गुजर रहा है लेकिन समग्र क्रान्ति का लक्ष्य अभी दूर है जिसे हासिल करना है और जिसके लिए संघर्ष निरंतर जारी रहना चाहिए।''[17]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बाहरी हर देव, राजपाल हिन्दी शब्दकोष, पृ0 सं0–386
2. प्रसाद कालिका, वृहद हिन्दी कोष, पृ0स0–384
3. दास श्यामसुंदर, हिन्दी शब्द सागर, छठा भाग, पृ0 स0–576
4. महर्षि नवेन्दु, ब्राह्मण की बेटी, प्राक्कथन, पृ0 स0–7
5. वही पृ0 स0–8
6. वही, भारत दलित क्रान्ति, आमुख, पृ0स0–7
7. वही, पुलिस व्यवस्था पर थूको, पृ0स0–16
8. वही, न्याय व्यवस्था पर थूको, पृ0स0–17
9. वही, रिश्वतखोरी पर थूको, पृ0स0–18
10. वही, मनुवादी व्यवस्था पर थूको, पृ0स0–22
11. वही, ब्राह्मणवाद पर थूको, पृ0स0–23
12. वही, धर्मवाद पर थूको, पृ0स0–24
13. वही, अंधविश्वासों पर थूको, पृ0स0–26
14. वही, भाग्यवाद पर थूको, पृ0स0–32
15. वही, अधूरी आजादी थूको, पृ0स0–48
16. वही, हीनता बोध पर थूको, पृ0स0–52
17. वही, भारत दलित क्रान्ति, आमुख पृ0स0–7